शुक्राचार्यकृत अष्टमूर्त्यष्टकस्तोत्र

वाराणसी में शुक्राचार्य की कठोर तपस्या से भगवान् शिव प्रकट हो उन्हें देव-दुर्लभ मृतसञ्जीवनी नाम की विद्या को प्रदान किया था। इसी विद्या के प्रभाव से शुक्राचार्य मृतक को भी जीवन प्रदान कर सकते थे। जब भगवान् शिव प्रकट हुए थे उस समय उन्होंने उनकी अष्टमूर्त्यष्टकस्तोत्र से स्तुति की थी। वह स्तोत्र इस प्रकार है-

त्वं भाभिराभिरभिभूय तमस्समस्तमस्तं नयस्यभिमतानि निशाचराणाम्।
देदीप्यसे दिवमणे गगने हिताय लोकत्रयस्य जगदीश्वर तन्नमस्ते।।
लोकेऽतिवेलमतिवेलमहामहोभिर्निर्भासि कौ च गगनेऽखिललोकनेत्रः।
विद्रावितारवितमास्सुतमो हिमांशो पीयूषपूरपरिपूरित तन्नमस्ते।।
त्वं पावने पथि सदा गतिरप्युपास्यः कस्त्वां विना भुवनजीवन जीवतीह।
स्तब्धप्रभञ्जनविवर्धितसर्वजन्तो संतोषिताहिकुल सर्वग वै नमस्ते।।
विश्वैकपावक नतावक पावकैक शक्ते ऋते मृतवतामृतदिव्यकार्यम्।
प्राणिष्यदो जगदहो जगदान्तरात्मंस्त्वं पावकः प्रतिपदं शमदो नमस्ते।।
पानीयरूप परमेश जगत्पवित्र चित्रातिचित्रसुचरित्रकरोऽसि नूनम्।
विश्वं पवित्रममलं किल विश्वनाथ पानीयगाहनत एतदतो नतोऽस्मि।।
आकाशरूपबहिरन्तरुतावकाशदानाद् विकस्वरमिहेश्वर विश्वमेतत्।
त्वत्तस्सदा सदय संश्वसिति स्वभावात् संकोचमेति भवतोऽस्मि नतस्ततस्त्वाम्।।
विश्वम्भरात्मक बिभर्षि विभोऽत्र विश्वं को विश्वनाथ भवतोऽन्यतमस्तमोऽरिः।
स त्वं विनाशय तमो मम चाहिभूष स्तव्यात्परः परपरं प्रणतस्ततस्त्वाम्।।
आत्मस्वरूप तव रूपपरम्पराभिराभिस्ततं हर चराचररूपमेतत्।
सर्वान्तरात्मनिलय प्रतिरूपरूप नित्यं नतोऽस्मि परमात्मजनोऽष्टमूर्ते।।
इत्यष्टमूर्तिभिरिमाभिरबन्धबन्धो युक्तः करोषि खलु विश्वजनीनमूर्ते।
एतत्ततं सुवितं प्रणतप्रणीत सर्वार्थसार्थपरमार्थ ततो नतोऽस्मि।।

(शिवपुराण रुद्रसंहिता युद्धखण्ड 50/24-32)

भावार्थ है-सूर्यस्वरूप भगवन्! आप त्रिलोकी का हित करने के लिये आकाश में प्रकाशित होते हैं और अपनी इन किरणों से समस्त अन्धकार को अभिभूत करके रात में विचरनेवाले असुरों का मनोरथ नष्ट कर देते हैं। जगदीश्वर! आपको नमस्कार है। घोर अन्धकार के लिये चन्द्रस्वरूप शंकर! आप अमृत के प्रवाह से परिपूर्ण तथा जगत् के सभी प्राणियों के नेत्र हैं। आप अपनी अमर्याद तेजोमय किरणों से आकाश में और भूतल पर अपार प्रकाश फैलाते हैं, जिससे सारा अंधकार दूर हो जाता है; आपको प्रणाम है। सर्वव्यापिन्! आप पावन पथ-योगमार्ग का आश्रय लेनेवालों की सदा गति तथा

उपास्यदेव हैं। भुवन-जीवन! आपके बिना भला, इस लोक में कौन जीवित रह सकता है। सर्पकुल के संतोषदाता! आप निश्चल वायुरूप से सम्पूर्ण प्राणियों की वृद्धि करनेवाले हैं, आपको अभिवादन है। विश्व के एकमात्र पावनकर्ता! आप शरणागतरक्षक और अग्नि की एकमात्र शक्ति हैं। पावक आपका ही स्वरूप है। आपके बिना मृतकों का वास्तविक दिव्य कार्य दाह आदि नहीं हो सकता। जगत् के अन्तरात्मा! आप प्राणशक्ति के दाता, जगत्स्वरूप और पद-पद पर शान्ति प्रदान करनेवाले हैं; आपके चरणों में मैं सिर झुकाता हूँ। जलस्वरूप परमेश्वर! आप निश्चय ही जगत् के पवित्रकर्ता और चित्र-विचित्र सुन्दर चरित्र करनेवाले हैं। विश्वनाथ! जल में अवगाहन करने से आप विश्व को निर्मल एवं पवित्र बना देते हैं, इसलिये आपको नमस्कार है। आकाशरूप ईश्वर! आप से अवकाश प्राप्त करने के कारण यह विश्व बाहर और भीतर विकसित होकर सदा स्वभाववश श्वास लेता है अर्थात् इसकी परम्परा चलती रहती है तथा आपके द्वारा यह संकुचित भी होता है अर्थात् नष्ट हो जाता है; इसलिये दयालु भगवन्! मैं आपके आगे नतमस्तक होता हूँ। विश्वम्भरात्मक! आप ही इस विश्व का भरण-पोषण करते हैं। सर्वव्यापिन्! आपके अतिरिक्त दूसरा कौन अज्ञानान्धकार को दूर करने में समर्थ हो सकता है। अतः विश्वनाथ! आप मेरे अज्ञानरूपी तम का विनाश कर दीजिये। नागभूषण! आप स्तवनीय पुरुषों में सबसे श्रेष्ठ हैं। इसलिये आप परात्पर प्रभु को मैं बारंबार प्रणाम करता हूँ। आत्मस्वरूप शंकर! आप समस्त प्राणियों के अन्तरात्मा में निवास करनेवाले, प्रत्येक रूप में व्याप्त हैं और मैं आप परमात्मा का जन हूँ। अष्टमूर्ते! आपकी इन रूप-परम्पराओं से यह चराचर विश्व विस्तारको प्राप्त हुआ है, अतः मैं सदा से आपको नमस्कार करता हूँ। मुक्तपुरूषों के बन्धो! आप विश्व के समस्त प्राणियों के स्वरूप, प्रणतजनों के सम्पूर्ण योगक्षेम का निर्वाह करनेवाले और परमार्थस्वरूप हैं। आप अपनी इन अष्टमूर्तियों से युक्त होकर इस फैले हुए विश्व को भलीभाँति विस्तृत करते हैं, अतः आपको मेरा अभिवादन है।

इस स्तोत्र द्वारा वाराणसीस्थित 'शुक्रेश' लिंग की अर्चना करनेवाले को सिद्धि प्राप्त होती है।

(प्रस्तुत स्तोत्र गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त शिवपुराण से लिया गया है।)

❀❀❀❀❀❀

पंचैतानि इह सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः।
आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च।।

(पद्मपु. भूमिखण्ड 81/46)

आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु-ये पाँच बातें जीव के गर्भ में रहते समय ही रच दी जाती हैं।